Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा - दसवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ-8 'भीड़ में खोया आदमी'
लेखक - लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा दसवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या 51 पर दिए पाठ-8 'भीड़ में खोया आदमी' के शेष भाग को पढ़ेंगे व समझेंगे।

प्रस्तुत पाठ लेखक लीलाधर शर्मा द्वारा रचित है। इसमें लेखक ने आज के समय की महत्त्वपूर्ण समस्या जनसंख्या वृद्धि से हमारा परिचय करवाया है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने यह बताया है कि बढ़ती जनसंख्या देश के लिए बहुत बड़ी चिंता का विषय है। इस पाठ के माध्यम से इस कड़वी सच्चाई को दिखाना ही लेखक का उद्देश्य है। जहाँ एक ओर जनसंख्या बढ़ रही है वहीं दूसरी ओर संसाधन घटते जा रहे हैं। प्रस्तुत पाठ में लेखक ने अपने मित्र श्यामलाकांत के बड़े परिवार को विचार का विषय बनाया है। लेखक हरिद्वार की ओर बिना आरक्षण के ही गाड़ी में चढ़ जाने के लिए जबरदस्त भीड़ का सामना करने को विवश होते हैं। यदि कुली ने उन्हें भीतर न धकेला होता, तो गाड़ी

छूट जाती। लक्सर में लेखक को गाड़ी बदलनी थी। वे खिड़की के रास्ते प्लेटफार्म पर कूदते हैं। बाहर देखते हैं कि पूरी छत पर यात्रियों की भीड़ है। वे सोचने लगे कि लोग अपने प्राणों को भयानक संकट में डालकर ट्रेन की छत पर सवार होने को विवश क्यों हुए? उन्हें रेल के नियम, व्यवस्था और अनुशासन का ध्यान क्यों नहीं है?

हरिद्वार स्टेशन पर श्यामलाकांत जी का बड़ा लड़का दीनानाथ लेखक को लेने आया था। उससे पता चला कि उसे पढ़ाई पूरी किए दो वर्ष हो गए परन्तु अभी तक कोई नौकरी नहीं मिली। रोज़गार कार्यालय के अधिकारी बताते हैं कि हज़ारों लोग पहले से वहाँ नाम दर्ज करवा चुके हैं। अत: वह अभी नौकरी की आशा न करे। लेखक सोचते हैं कि छोटे शहरों का यह हाल है तो बड़े शहरों में कितनी बेरोज़गारी होगी।

मित्र के घर पहुँचने पर लेखक ने देखा कि छोटे से मकान में सामान की कूसमठास और बच्चों की भीड़ है। वहाँ उनका दम घुटने लगा। पूछने पर पता चला कि दो वर्ष से खुले मकान की तलाश की जा रही है। शहर फैल रहा है। चारों ओर नई-नई कालोनियाँ बन रही हैं परन्तु उन्हें कोई मकान न मिला। न जाने कितने लोग मकानों के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। अभाव केवल मकानों का ही नहीं है, खाने-पीने के सामान का भी है।

बच्चो! अब हम पाठ को पृष्ठ संख्या-53 से पढ़ना व समझना आरंभ करते हैं।

तभी श्यामलाकांत जी की पत्नी अतिथि सत्कार करते हुए लेखक के लिए जलपान लेकर आती हैं। उनकी पत्नी की पीछे तीन छोटी लड़कियाँ और दो छोटे

लड़के पल्ला पकड़े खड़े हैं। उनके दुर्बल शरीर और पीले चेहरे को देखकर लेखक स्तब्ध (हैरान) रह गए। लेखक का उन्हें देखकर ऐसा लगा मानो वे बीमार हैं। अतः लेखक ने मित्र की पत्नी से पूछा कि आप कब से अस्वस्थ हैं। आपने अच्छे डॉक्टर से अपना इलाज नहीं करवाया। वे मुस्कुराईं परन्तु उनकी मुस्कुराहट में किसी भी प्रकार का आकर्षण नहीं था। वे बोली इतना बड़ा परिवार है इस कारण वे अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं दे पाती। आए दिन कोई न कोई बीमार रहता ही है। वे बताती हैं कि वह डॉक्टर को दिखाने अस्पताल गई थीं। वहाँ अपार भीड़ थी। रोगी और उनके सम्बन्धी मधुमक्खी के छत्ते की तरह डॉक्टर को घेरे रहते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण किसी भी स्थान पर चले जाइए हर जगह भरी रहती हैं। आजकल तो ऐसा लगता है कि सारा शहर रोग से ग्रस्त हैं, सब जगह लोगों की भीड़ लगी रहती हैं। लेखक के मित्र की पत्नी बताती है कि वे विवाह के कपड़े दर्जी से सिलवाना चाहते थे। दीनानाथ को दर्जी के पास भेजा तो दर्जी फुर्सत में न था। उसने दुकान पर पहले आए कपड़ों का ढेर दिखाकर इन्कार कर दिया। पहले समय में जब ग्राहक दुकान पर आता था तो ग्राहक का स्वागत होता था। दुकानदार काम करने के लिए तत्पर रहता था परन्तु आजकल दुकानदारों के पास ग्राहकों की कमी नहीं है इसलिए ग्राहकों को ही दुकानदारों की मिन्नतें करनी पड़ती हैं फिर भी समय पर काम नहीं हो पाता। बढ़ती भीड़ के कारण अधिक दुकानें भी कम पड़ रही हैं अर्थात् हर चीज़ की उचित व्यवस्था है लेकिन अधिक जनसंख्या के

कारण लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

श्यामलाकांत के दूसरे बेटे सुमंत के चेहरे पर झुँझलाहट थी। वह बाहर से आकर स्वयं को थका-सा महसूस कर रहा था। वह माँ से कहता है कि वह राशन की दुकान पर गया था। इतनी लंबी लाइन होने के कारण वह पूरा सामान नहीं ले पाया। लेखक अपने आसपास होती समस्याओं को देख रहे थे। वे सोचने लगे कि इन सबका आखिर क्या कारण है। ऐसी बात नहीं कि सुविधाओं की कमी है। सुविधाएँ तो पहले से अधिक हो गई हैं, लोगों को रोज़गार मिलने के रास्ते भी बढ़ गए हैं। यातायात के साधन भी बढ़ गए हैं, फिर भी लोगों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पा रही हैं। सब जगह भीड़ अधिक मात्रा में है। इस भीड़ का क्या कारण है? क्या लोग स्वयं इसके लिए उत्तरदायी हैं। लेखक स्वयं से ही प्रश्न करने का प्रयास करते हैं।

लेखक के अनुसार यह सत्य है कि बच्चों से भरा खुशहाल परिवार सबको अच्छा लगता है परन्तु जब बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से न हो पाए, उन्हें शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध न हो पाए तो ऐसा परिवार बोझ के समान बन जाता है। अस्पतालों में भीड़ क्यों है? क्या कोई स्वयं इच्छा से अस्वस्थ होना चाहता है? नहीं, यदि हम तंग मकानों में रह रहे हैं, आसपास गंदगी फैली है, खाने-पीने का अभाव है ये सब बीमारी के कारण है। यदि छोटा परिवार हो, आसपास का वातावरण स्वच्छ हो, खाने के लिए खाद्य सामग्री भरपूर मात्रा में उपलब्ध हो अर्थात् पौष्टिक भोजन हो तो बीमारियों से बचा जा

सकता है। रेल या बस में भीड़ का कारण भी बढ़ती जनसंख्या ही है। इससे देश के अनुशासन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वह प्रगति के पथ पर सही ढंग से नहीं चल पाता। भीड़ के कारण ही सड़कों पर दुर्घटनाएँ होती हैं। सार्वजनिक स्थानों पर सरकार द्वारा लोगों के लिए बनाए नियमों का पालन सही ढंग से नहीं हो पाता। व्यक्ति की सुविधाओं के लिए संस्थान व कार्यालय बनाए गए हैं। वह उन सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाता और वहाँ जाकर उसे परेशानियों का ही सामना करना पड़ता है। वह स्वयं भीड़ में खो जाता है अर्थात् वह कतार में रहकर अपनी बारी का इंतज़ार ही करता रह जाता है और काम देरी से होता चला जाता है। धीरे-धीरे मनुष्य को यह तो समझ में आ जाता है कि जितनी भी समस्याएँ पैदा हो रही हैं। वह केवल अनियंत्रित जनसंख्या के ही परिणाम हैं। लेखक कहते हैं कि श्यामलाकांत भी उन्हीं लोगों में से एक हैं जिन्होंने अपने लिए समस्याएँ स्वयं ही पैदा की हैं अब वे स्वयं ही इन समस्याओं को झेल रहे हैं। लेखक के अनुसार यदि अब भी मनुष्य नहीं चेता तो वह दिन भी दूर नहीं जब मनुष्य इसी भीड़ में और अधिक जनसंख्या से उत्पन्न होने वाली समस्याओं में खोकर सदा के लिए गुम हो जाएगा।

लेखक ने हमारा ध्यान बहुत बड़ी समस्या की ओर खींचा है और यह बताने का प्रयास भी किया है कि बढ़ती जनसंख्या हर समस्या का हल नहीं है, बल्कि हर समस्या का कारण है इसलिए आवश्यक है कि जनसंख्या को कम किया जाए। परिवार सीमित

होने चाहिए। बच्चों का पालन पोषण अच्छे ढंग से हो तथा उन्हें उचित शिक्षा उपलब्ध करवाई जाए जिसके कारण वे अच्छे नागरिक बन सकें और देश का विकास भी उचित ढंग से हो सके।

बच्चो! आज हमारा यह पाठ पूर्ण हो चुका है। आप सभी इस पाठ को पुनः पढ़ेंगे व पूर्णता से समझने का प्रयास भी करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

" कब से अस्वस्थ हैं ? डॉक्टर को दिखाकर इलाज क्यों नहीं करा रही हैं क्या ?

(क) यह पंक्ति किसने, किससे कही और क्यों कही ?

(ख) इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने किस परेशानी का उल्लेख किया ?

(ग) व्यक्ति बीमार किन कारणों से होता है ? कोई दो कारण बताएँ। इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है ?

(घ) बीमारियों से बचने के कोई दो उपाय बताएँ ?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]